संजय की कलम से ...

सरल स्वभाव

सरल स्वभाव वाला मनुष्य बाहर-भीतर या मनसा-वाचा-कर्मणा से एक-जैसा होता है। उसके मन में एक और बाहर में दूसरी बात नहीं होती। वह बनावट, छल-कपट या कुटिलता से व्यवहार नहीं करता इसलिए लोग उससे निश्चिंत रहते हैं और उसकी सच्ची-सच्ची, भोली-भोली बातें प्यारी लगती हैं। ऐसा व्यक्ति यदि कोई ऐसी बात भी कह दे जो लोगों को पसंद न हो तो भी वे उससे इतना नाराज़ नहीं होते जितना छल-कपट वाले से क्योंकि वे जानते हैं कि इस मनुष्य का मन साफ है, इसने हमसे धोखा करने या हमें गिराने के विचार से ऐसा नहीं कहा बल्कि हमारे बारे में जो कुछ इसका विचार था, इसने उसे सीधेपन और सादगी से कह दिया है। यदि वे थोड़े समय के लिए उसकी किसी बात से नाराज़गी प्रकट करें भी तो थोड़ी देर के बाद उनका मन अन्दर से उन्हें कहता है – ''ऐसे सीधे और सच्चे आदमी से नाराज़ होना या उससे कुछ बुरा कहना ठीक बात नहीं है।'' अत: वे शीघ्र ही और स्वत: ही फिर उससे स्नेह जोड़ लेते हैं क्योंकि उसकी सरलता, सच्चाई, मन की सफाई तथा भोलापन उन्हें आकर्षित करता है।

जैसे सरल स्वभाव वाले व्यक्ति से दूसरे सन्तुष्ट रहते हैं, वैसे सरल स्वभाव वाला मनुष्य स्वयं सन्तुष्ट रहता है। यदि किसी कारण से उसके मन में किसी प्रकार की असन्तुष्टता आये भी, तो भी थोड़ा ही समझाए जाने पर वह अपने सरल स्वभाव के कारण जल्दी ही सन्तुष्ट हो जाता है। परन्तु टेढ़े स्वभाव वाला मनुष्य दूसरे की बात में, चाहे वह अच्छे भाव से तथा उसके कल्याण के लिए ही कही गई हो, यह देखता रहता है कि इसमें कोई छल या कपट या बनावट तो नहीं है? इस प्रकार वह अपने ही कल्याण के बारे में लोगों से कोई बात सुनने पर भी उस बात को पवित्र हृदय से ग्रहण नहीं करता। इसलिए उसके जीवन में अथवा संस्कारों में जल्दी परिवर्तन नहीं आता।

सरल व्यक्ति का मन साफ होने के कारण उसमें दूसरे दिव्य गुणों की धारणा भी जल्दी हो जाती है जबकि कपटी अथवा चालाक व्यक्ति के जीवन में दिव्य गुणों की धारणा इतनी जल्दी नहीं होती क्योंकि उसका मन किसी-न-किसी उधेड़बुन में लगा रहता है। कभी वह सोचता है, ''भूतकाल में उस मनुष्य ने मेरे साथ अच्छा व्यवहार नहीं किया था, अब मेरे साथ अच्छाई कैसे कर सकता है अथवा आज तक फलाँ मनुष्य ठीक नहीं है, वह भविष्य में भी बदलने वाला दिखाई नहीं देता!'' परन्तु जो सरल-चित्त व्यक्ति होता है, वह तो अपनी मस्ती में मस्त रहता है और यही सोचता है कि जैसा कोई करेगा, वैसा पायेगा। वह अपनी सत्यता को किसी भी हालत में नहीं छोड़ता। इसलिए, ''सच्चे दिल पर साहिब राज़ी'' होने की उक्ति के अनुसार उसे ईश्वर से सहायता भी मिलती है। उसके सीधेपन, उसकी सच्चाई तथा मन की सफाई के कारण दूसरे लोग भी उसे आशीर्वाद देते तथा उससे स्नेह करते हैं। अत: वह अपने-आपसे भी सन्तुष्ट और सुखी रहता है।

अमृत-सूची

- दुख-सुख हैं कर्मजन्य *(सम्पादकीय)*..... 4
- जीवन जीने की कला 6
- ज्ञानामृत महिमा *(कविता)* 9
- 'पत्र' संपादक के नाम 10
- ईश्वरीय कारोबार में.....11
- श्रद्धांजलि 14
- खामोश बेशक हूँ *(कविता)* 14
- जीवन रक्षक बैज 15
- सार्वभौमिक बंधुत्व 16
- परमात्मा परमशिक्षक के रूप ..19
- जब बाबा ऑटो में साथ 21
- युद्ध कर और विजयी बन 22
- विश्व बंधुत्व दिवस पर.....24
- ज़िन्दगी आसान है *(कविता)* ...25
- बाबा ने बनाया सहनशील 26
- विकार का अनछुआ.....27
- तबादला रद्द हो गया 28
- अहंकार का बोझ 29
- सचित्र सेवा समाचार 30
- फसल पर योग का प्रभाव.....32

सदस्यता शुल्क

	वार्षिक	आजीवन
भारत		
ज्ञानामृत	100 /-	2,000/-
वर्ल्ड रिन्युअल	100/-	2,000/-
विदेश		
ज्ञानामृत	1,000 /-	10,000/-
वर्ल्ड रिन्युअल	1,000/-	10,000/-

शुल्क केवल 'ज्ञानामृत' अथवा 'द वर्ल्ड रिन्युअल' के नाम से ड्राफ्ट या मनीऑर्डर द्वारा भेजने हेतु पता है- संपादक, ओमशान्ति प्रिंटिंग प्रेस, ज्ञानामृत भवन, **शान्तिवन- 307510 (आबू रोड) राजस्थान।**

शुल्क के लिए सम्पर्क करें -
09414006904, 09414423949
hindigyanamrit@gmail.com